बगुला और पेंसिल 22

बाला को मिली एक पेंसिल। उसने लिया एक कागज और बनाने लगी एक बगुला। तभी पेंसिल उसके हाथ से छूटी। लुढ़ककर पेंसिल पलंग के नीचे चली गई।

बाला पेंसिल निकालने के लिए झुकी, पर उसका हाथ पहुँचा ही नहीं। वह फुटा (पैमाना/मापक) लेकर आई, पर वह भी नहीं पहुँचा। फिर बाला लाई एक छड़ी, पर उससे घसीटते नहीं बना।

तभी कागज से बगुला बाहर आया। मैं लाऊँ ? उसने कहा। वह पलंग के नीचे गया । पर सबसे पहले वह लाया, बाला की एक पुरानी गेंद। नहीं, बाला ने कहा – मेरी तो लंबी चीज गिरी है।

बगुला फिर गया। इस बार वह लेकर आया एक बाँसुरी। नहीं, बाला ने कहा ''मेरी तो लिखने की चीज गिरी है।''

इस बार बगुला गया, तो पेंसिल ही लेकर आया। बाला बहुत खुश हुई। उसने कहा – मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकती हूँ ? बगुले ने कहा – मेरे पंख बना दो ना। बाला ने चित्र पूरा किया। फिर उसने अपने मित्र को उड़ जाने दिया।

अनुभव - विस्तार

प्रश्न : नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो –

(1) बाला ने किसका चित्र बनाया ?

उत्तर .....

(2) पेंसिल लुढ़ककर कहाँ चली गई थी ?

उत्तर .....

(3) कागज से निकलकर बाहर कौन आया ?

उत्तर .....

प्रंश्न 2 बगुला द्वारा गई वस्तुओं को क्रम से जमाओ –

(बाँसुरी, पेंसिल, गेंद)

(1) .....

(2) .....

(3) .....

प्रश्न 3 किसने किससे कहा ?

(1) मैं लाऊँ .....

(2) मेरी तो लंबी चीज गिरी है .....

(3) मेरे पंख बना दो ना .....